

॥ रामाष्टकम् ॥

भजे विशेषसुन्दरं समस्तपापखण्डनम् ।
 स्वभक्तचित्तरञ्जनं सदैव राममद्वयम् ॥ १ ॥
 जटाकलापशोभितं समस्तपापनाशकम् ।
 स्वभक्तभीतिभञ्जनं भजे ह राममद्वयम् ॥ २ ॥
 निजस्वरूपबोधकं कृपाकरं भवापहम् ।
 समं शिवं निरञ्जनं भजे ह राममद्वयम् ॥ ३ ॥
 सहप्रपञ्चकल्पितं ह्यनामरूपवास्तवम् ।
 निराकृतिं निरामयं भजे ह राममद्वयम् ॥ ४ ॥
 निष्प्रपञ्चनिर्विकल्पनिर्मलं निरामयम् ।
 चिदेकरूपसन्ततं भजे ह राममद्वयम् ॥ ५ ॥
 भवाब्धिपोतरूपकं ह्यशेषदेहकल्पितम् ।
 गुणाकरं कृपाकरं भजे ह राममद्वयम् ॥ ६ ॥
 महावाक्यबोधकैर्विराजमानवाक्पदैः ।
 परं ब्रह्मसद्वापकं भजे ह राममद्वयम् ॥ ७ ॥
 शिवप्रदं सुखप्रदं भवच्छिदं भ्रमापहम् ।
 विराजमानदेशिकं भजे ह राममद्वयम् ॥ ८ ॥

रामाष्टकं पठति यः सुखदं सुपुण्यम्
 व्यासेन भाषितमिदं शृणुते मनुष्यः।
 विद्यां श्रियं विपुलसौख्यमनन्तकीर्तिम्
 सम्प्राप्य देहविलये लभते च मोक्षम् ॥ ९ ॥
 ॥ इति श्री व्यासविरचितं श्री रामाष्टकं सम्पूर्णम् ॥

This stotra can be accessed in multiple scripts at:

<http://stotrasamhita.net/wiki/Ramashtakam>

Facebook: <http://facebook.com/StotraSamhita>

GitHub: <http://github.com/stotrasamhita>

Credits: <http://stotrasamhita.net/wiki/StotraSamhita>About>